# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष

## शिव कुमार लोहिया

का

## अभिभाषण

27वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन, गुवाहाटी

13-14 मई 2023

# अंतरंग परिचय

- **नाम** - **शिव कुमार लोहिया**
- **जन्म** - 8 **नवंबर** 1953
- **शिक्षा** – बी.कॉम. ऑनर्स
- **परिवार** - कोलकाता के प्रवीण समाजसेवी स्वर्गीय विश्वनाथ लोहिया जी के पुत्र। दो पुत्र - विकास लोहिया, विवेक लोहिया। दो पुत्रवधुएँ, दो पौत्र एवं दो पौत्रियाँ
- **व्यवसाय** - कास्ट आयरन फाऊंड्री। पाइप, पाइप फिटिंग वाल्व आदि के निर्माता।
- **इष्टदेव** – भगवान श्री कृष्ण
- **आदर्श** – स्वामी विवेकानंद, नेल्सन मंडेला, जमनालाल बजाज
- **प्रिय विषय** – संस्कार और संस्कृति
- **रुचि** – स्वस्थ रहना, सामाजिक सरोकार रखना, पढ़ना-लिखना, विचार-विमर्श
- **सर्वश्रेष्ठ ज्ञान का स्रोत** – श्रीमद्भागवत गीता
- **प्रेरणा स्रोत, मार्गदर्शक** : पिता स्वर्गीय विश्वनाथ लोहिया
- **पुस्तकें प्रकाशित** – भाव धारा : समाज एवं संस्कृति, मन के द्वार (कविता संग्रह), कुछ कही कुछ अनकही, लेशंस ऑफ लाइफ (अंग्रेजी), मारवाड़ी समाज एवं सम्मेलन (प्रकाशाधीन), समाज के जुझारू सिपाही – विश्वनाथ लोहिया, भगवान नृसिंह देव (अनुवाद), राजापुर का जगन्नाथ (अनुवाद)।

*पृष्ठ 11 देखें*

## अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

# 27वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

### 14 मई 2023 (रविवार)

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण, राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्वोत्तर सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कैलाश काबरा, समारोह के स्वागताध्यक्ष, कक्ष में उपस्थित केंद्रीय-प्रांतीय अधिकारीगण, प्रदेशों से पधारे प्रतिनिधिगण, सदस्यों, कार्यकर्ताओं, मातृशक्ति एवं सज्जनों!

नीलाचल पहाड़ पर स्थित माँ कामाख्या देश के 52 शक्तिपीठों में सबसे प्रसिद्ध हैं। उन्हें कुब्जिका, काली और महात्रिपुर सुंदरी के रूप में जाना जाता है। मान्यता है कि यहाँ हर किसी की कामना सिद्ध होती है। इसी कारण इसे कामख्या मंदिर कहा जाता है। अपना वक्तव्य प्रारंभ करने से पहले मैं माता से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ-

**कामख्ये काम सम्पन्ने कामेश्वरि हर प्रिये**
**कामनाः देहि मे नित्य कामेश्वरी नमोस्तुते।**

माँ कामाख्या की इस पावन भूमि पर आप सबों का मैं आत्मिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ। इस अधिवेशन की सफलता के लिए माँ कामाख्या से विनती करता हूँ कि माँ-

**तुम नई स्फूर्ति इस तन को दो**

**तुम नई चेतना इस मन को दो**
**तुम नया ज्ञान जीवन को दो।**

बंधुओं, आप सबों को जानकर यह आश्चर्य मिश्रित हर्ष होगा कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के गठन के चार महीने पहले डिब्रूगढ़ के समाज बंधुओं ने 18 अगस्त 1935 को असम मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कॉमर्स की साधारण सभा में असम प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का गठन किया था।

सर्वप्रथम मैं सम्मेलन के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि मुझ जैसे अकिंचन को आपने राष्ट्रीय अध्यक्ष के गरिमामय पद पर कार्य करने का सुअवसर प्रदान किया। मैं आपलोगों को आश्वस्त करना चाहूँगा कि आपलोगों के विश्वास एवं स्नेह पर मैं खरा उतरने के लिए हर संभव एक निष्ठ प्रयास करूँगा। इस प्रयास में आपकी सक्रिय सहयोगिता, मार्गदर्शन मेरे पाथेय रहेंगे। आपके साथ मैं एवं मेरे साथ आप चलेंगे तो निश्चय ही हमारी यात्रा सफल एवं सार्थक होगी।

आज हम सम्मेलन के 27वें अधिवेशन के अवसर पर एकत्रित हुए हैं। यहाँ अपने विचारों के मंथन एवं आपसी संवाद के माध्यम से निकला अमृत अगले दो वर्षों तक संजीवनी का कार्य करेगी। ये ही हमारी दशा एवं दिशा तय करेंगे। सम्मेलन का गठन जिन परिस्थितियों एवं जिन उद्देश्यों के लिए हुआ था, यह हमें विदित है। प्रथम में संगठन को व्यापक करने के लिए सम्मेलन ने संगठन, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक विकास और राजनीतिक जागरण का पंचसूत्रीय कार्यक्रम अपनाया था। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सम्मेलन ने समाज सुधार का बिगुल बजाया। समाज की आधी आबादी को शारीरिक एवं मानसिक गुलामी से जकड़ने वाली, उनके विकास को अवरुद्ध करने वाली पर्दाप्रथा के विरुद्ध एवं नारी शिक्षा के समर्थन में तुमुल आंदोलन छेड़ा गया। सारे देश में इस आंदोलन की प्रचंड लहर फैली। प्रदेश, जिला एवं शाखा स्तर पर जगह-जगह समाज बंधुओं ने इस कार्यक्रम को आंदोलन का स्वरूप प्रदान कर दिया। कलकत्ता एवं अन्य स्थानों पर कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह भी किए, जिसकी गूँज देश के कोने-कोने में प्रतिध्वनित हुई। पर्दा के बंधन से निकलकर महिलाओं में शिक्षा

की अभूतपूर्व चेतना जागी। इसी का परिणाम है कि आज हमारी बहन-बेटियाँ डॉक्टर, वकील, सी.ए., सी.एस., साहित्य लेखन, व्यापार, उद्योग, संगीत, नृत्य, नाटक, अभिनय, चित्रकारी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। देश के किसी भी कोने में जब-जब समाज-बंधुओं पर आफत-विपत आई, तब सम्मेलन ने हस्तक्षेप किया। हमें यह जानने की जरूरत है कि सम्मेलन का गौरवमय इतिहास है। इसकी स्वर्णिम उपलब्धियाँ हैं, इसके उद्देश्य व्यापक एवं सर्वजनहिताय है। इसका वर्तमान गतिमान है। इसका भविष्य उज्ज्वल है। हम कह सकते हैं–

**सम्मेलन से बढ़कर धनी और कौन है**
**इसके हृदय में पीर है पूरे समाज की।**

एक बात और जो सम्मेलन को विशिष्टता प्रदान करती है, वह है कि यह मारवाड़ी समाज जैसे सशक्त समाज का प्रतिनिधित्व करती है। हमारी संस्कृति पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। वीरांगनाओं की आन, शूरवीरों का मान, अतिथियों का सम्मान, राजपूतों की शान संजोये है हमारी संस्कृति। लोकनृत्य, लोक साहित्य, रंग-बिरंगे परिधान, तीज त्योहार, पारंपरिक पकवान, नयनाभिराम पर्यटन स्थल, आकर्षणीय आभूषण, बालू के टीले, दुर्ग-किले, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, कहावते संजोये हमारी संस्कृति समाज का मान ऊँचा कर देती है।

## संस्कार एवं संस्कृति

दुख की बात है कि हम हमारी विशेषताओं से दूर होते जा रहे हैं। अगर अनाज का अभाव होता है तो मानव मरता है। अगर संस्कार का अभाव होता है तो मानवता मरती है। अपने बच्चों के लिए धन संपत्ति छोड़ना साधारण बात है, किंतु संस्कार एवं संस्कृति के अभाव में यह धन उन्हें सुख प्रदान नहीं कर पाएगा। इस दिशा में हमें सचेत होना है। इसके अंतर्गत कार्य करने का अवसर एवं आवश्यकता दोनों है। हमारे बच्चे समाज के ध्वजावाहक हैं। हमारी बहन-बेटियाँ हमारी संस्कृति की संवाहक हैं। मिलजुल कर इस दिशा में नए सोच, नए जोश के साथ काम करना है। इसमें कोई शक नहीं कि इसके दूरगामी फल मिलेंगे।

## समाज सुधार

समाज में आज हम देखते हैं कि धन का बोल-बाला है। सामाजिक क्रांति का उद्देश्य नेपथ्य में जा रहा है। गांधी जी बराबर कहते थे कि सामाजिक क्रांति राजनीतिक क्रांति की अपेक्षा कई गुणा अधिक जटिल और कठिन है। राजनीतिक क्रांति के लिए शासकों से लड़ना पड़ता है, पर सामाजिक क्रांति के लिए व्यक्ति को अपने आपसे लड़ना पड़ता है। जब तक व्यक्ति विरोध सहकर, संघर्ष करके आरोपों की परवाह न करके अपने विचारों के अनुरूप आचरण न कर सके, तब तक समाज में बदलाव नहीं आ सकता।

**उसूलों पर आँच आए तो टकराना जरूरी है**
**जो जिंदा हो तो जिंदा नजर आना जरूरी है।**

हमें यह याद रखना होगा कि समाज का बहुत बड़ा तबका निम्न मध्यम वर्ग एवं मेहनतकश लोग हैं। उनके लिए रोजी-रोटी आदि की समस्या का संपूर्ण हल आज भी नहीं है। उनकी स्थिति जनसाधारण की स्थिति से किसी भी प्रकार से बेहतर नहीं है, पर मारवाड़ी होने के कारण उन्हें लखपति समझ लिया जाता है।

इसमें कोई शक नहीं कि पिछले 20-30 वर्षों में समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। परिवर्तन जीवन का अकाट्य नियम है। बदलते समय के साथ समाज को भी बदलना पड़ेगा। जो स्वयं को नहीं बदल पाएँगे, उन्हें परिवर्तन जीवन के क्रम से हटाकर फेंक देगा। हमें ध्यान रखना होगा कि हम परिवर्तन के दास नहीं बने और अपने दूरदृष्टि एवं पुरुषार्थ से परिवर्तन के घोड़े की सवारी करें। परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों काल में परिवर्तन का रथ गतिमान रहता है। अतएव, हम अपने प्रयासों में शिथिलता नहीं ला सकते। चैतन्यता के साथ हमें इस रथ पर आरूढ़ होकर अपनी दिशा स्वयं निर्धारित करते रहना होगा। इसका कोई विकल्प नहीं है। समाज में आज नई-नई विसंगतियाँ, कुरीतियाँ पनप रही हैं। आडंबर, फिजूलखर्ची, बुजुर्गों का घटता सम्मान, मद्यपान का बढ़ता चलन, संस्कारों की अनदेखी, युवक-युवतियों के विवाहों के लिए बढ़ते उम्र, संबंधों में तनाव, तलाक के बढ़ते मामले, व्यापार में साख की अवनति आदि ऐसे मुद्दे हैं जो हमारे सामने मुँह बाये है। इन विषयों

पर हमें मिलकर विचार करना होगा कि किस प्रकार हम इनका सामना करेंगे। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को **'आत्म दीपो भव'** बनकर इस अंधकार को दूर करना होगा क्योंकि कहा गया है -

**यह अंधेरा इसलिए है खुद अंधेरे में हैं आप**
**आप अपने आप को दीपक बनाकर देखिए।**

## हमारा समाज - एक समाज - श्रेष्ठ समाज

मैं, हमारे संस्थापकों एवं तत्पश्चात सभी पूर्वजों के मेधा एवं समर्पण के प्रति आत्मीय नमन व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने सम्मेलन रूपी मंच समाज को प्रदान किया। प्रसन्नता की बात है कि विगत दशक में सम्मेलन ने नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण में फैले पूरे समाज को एक सूत्र में पिरोने का सपना साकार होता दिख रहा है। सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष ने कहा था कि संपूर्ण मारवाड़ी का सामाजिक संगठन हमारा उद्देश्य है। उन्होंने स्वीकारा था कि अभी तक विभिन्न शाखाओं के संगठन, शृंखला में न रहने के कारण देश के सार्वजनिक जीवन पर अपेक्षित प्रभाव नहीं रख पा रहे हैं। अतएव समाज के सभी अंगों के साथ एकता स्थापित करना हमारा उद्देश्य है।

ध्यान से हम विचार करें तो इस स्थिति में अपेक्षित सुधार करने की अनेकानेक संभावनाएँ हैं। इस दिशा में सशक्त एवं सार्थक कदम उठाने की आवश्यकता है। आपसी समन्वय एवं सामंजस्य के साथ घटकों के बीच में खड़ी दीवालों में हमें खिड़कियाँ लगानी पड़ेंगी। यह समाज एवं राष्ट्रहित दोनों में है। महात्मा गांधी ने कहा था - "आज जो जातियाँ हैं, उनको आहूतियों के रूप में उपयोग करिए, आप नई न बढ़ने दीजिए।" मैं इस मंच से समाज के सभी अंगों का आह्वान करता हूँ कि भाईचारे की भावना से इस दिशा में कदम बढ़ायें। इस सत्र में सम्मेलन का मंत्र होगा-

## आपणो समाज - एक समाज - श्रेष्ठ समाज

अंदर से हम जो भी अपने को समझें, बाहर वालों के लिए हम सब मारवाड़ी हैं। इस विषय में कुछ शंकाएँ व्यक्त की जाती हैं। उनको मैं कहना चाहूँगा।

**कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं हो सकता,**
**एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।**

मंजिल ना मिले, यह तो मुकद्दर की बात है, हम कोशिश भी ना करें यह तो गलत बात है। यह कार्य दुष्कर एवं समय सापेक्ष है पर असंभव नहीं।

## समाज सेवा

मैं आपको स्मरण करवाना चाहूँगा कि स्थापना के समय से ही सम्मेलन द्वारा अपनाए गए पंच सूत्री कार्यक्रम में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक विकास जैसे बिंदु चुने गए थे। सम्मेलन एक वैचारिक संस्था है। विचारों के द्वारा समाज सुधार के कार्यक्रम भी समाज सेवा के उत्कृष्टतम उदाहरण हैं। अतएव समाज सुधार एवं समाज सेवा में कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं है।

शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न स्तरों पर सम्मेलन उल्लेखनीय कार्य वर्षों से कर रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में बढ़ते खर्चों के मद्देनजर समाज के कमजोर वर्गों को किसी भी मान्य तरीकों से सहयोग करना, समाज में सम्मेलन की ग्राह्यता को बढ़ावा देगा। साथ ही पर्यावरण संरक्षण एक ऐसा मुद्दा है जो मानव जाति के अस्तित्व को चुनौती देता नजर आ रहा है। भावी पीढ़ी को एक स्वस्थ पर्यावरण सौंपना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है, ताकि वे सुख के साथ अपना जीवन-यापन कर सके। सावधानी पूर्वक सोच-विचार कर हमें इन विषयों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी हैं, ताकि हम अपना परिचय एक जिम्मेदार समाज के रूप में प्रस्तुत कर सकें। मेरा यह आग्रह रहेगा, समाज सेवा के कार्यों को हम सोच-विचार कर अपनाएँ। सिर्फ उन्हीं कार्यों को सम्मेलन की प्रत्येक स्तर की इकाईयाँ अंजाम दें, ताकि हमारा कार्य राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी हो सके।

उपर्युक्त बिंदुओं के साथ सम्मेलन सदैव समरसता, समाज की प्रतिमा, राजनीतिक भागीदारी जैसे मुद्दों पर कार्य करता आ रहा है। इन मुद्दों पर सम्मेलन के दिशा-निर्देश स्पष्ट एवं पारदर्शी हैं। उनको मानते हुए हमें आगे बढ़ना है। समरसता के विषय में यह कहना चाहूँगा कि हमें समरसता, समाज के विभिन्न घटकों में भी स्थापित करना है। जिन प्रदेशों में हम बसे हैं वहाँ समरसता के

तहत हम अपने संस्कार और संस्कृति का पालन करते हुए स्थानीय नागरिकों से सद्भावना एवं सहयोग की भावना के साथ एकात्मता स्थापित करें।

संचार क्रांति, सोशल मिडिया एवं डिजिटल के युग में सम्मेलन को उपलब्ध अवसरों को अपनाना होगा। इन प्रयासों से हम अंदरुनी एवं बाहरी जगत से सूचनाओं का द्रुत एवं प्रभावी वितरण कर सकेंगे।

देवियों एवं सज्जनों, विभिन्न पदों पर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए मैंने सम्मेलन के गुरुतर महत्व को समझा है। इसके प्रति समाज में उपस्थित एक डोर से जुड़े तारों के संबंधों को महसूस किया है। सम्मेलन की प्रासंगिकता व्यापक है। मैं समझता हूँ कि सम्मेलन के प्रति हममें एक लगाव की भावना उपस्थित है। सम्मेलन का प्रतिनिधित्व करते हुए देश के विभिन्न भागों में मैंने समाज-बंधुओं का स्नेह एवं आशीर्वाद प्राप्त किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि आगामी दो वर्ष का कालखंड मेरे जीवन के सार्थकतम कालखंडों में से एक होगा। सर्वत्र मैंने समाज के भाई-बहनों में स्नेह, सम्मान, सहयोग की भावना का उद्रेक पाया है। मैं उनसे बहुत उत्साहित हूँ। सम्मेलन के प्रति सर्वत्र लोगों का जुड़ाव बढ़ रहा है, यह एक हर्ष का विषय है। मुझे आशा है कि आप सबों का साथ एवं सहयोग, हमारी यात्रा को सुखद एवं फलदायी बनाएगी। नव जागृति के साथ भाई-बहनों के उत्साह, उमंग को सही दिशा में मोड़कर सम्मेलन को हम नई ऊँचाई प्रदान करने का प्रयास करेंगे।

सम्मेलन के प्रत्येक कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करना चाहूँगा। कार्यकर्ताओं को स्नेह एवं आदर देकर उन्हें प्रोत्साहन देना होगा। नए कार्यकर्ताओं के जुड़ने से ही सम्मेलन में प्रवाह एवं गति कायम रह पाएगी। कोई पिछड़ न जाए, कोई बिछुड़ न जाए इसका हमें सदैव ध्यान रखना होगा। मेरी बातों को आपने धैर्यपूर्वक सुना, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। धन्यवाद

**जय सम्मेलन, जय समाज, जय राष्ट्र!**

## (कानपुर में दिए गए वक्तव्य का अंश)

हमारा समाज एक सशक्त समाज है। लोहा भी अत्यधिक शक्तिशाली होता है, किंतु अगर जंग लग जाए तो क्षय होने लगता है। नई विसंगतियाँ एवं चुनौतियाँ जंग के समान ही हैं। उनका निवारण हमें मिलकर करना है। समाज के सामने आज अनेक समस्याएँ हैं। नई विसंगतियाँ पनप रही हैं। इन विसंगतियों के विषय में कहा जा सकता है–

**हमें बहुत खूबसूरत नजर आ रही है,**
**यह राहें तबाही के घर जा रही हैं।**

समाज का विकसित होना इस बात पर निर्भर करता है कि सामूहिक हित साधना के लिए क्या व्यवस्था है? समाज की प्रमुख संस्थाएँ किस प्रकार सार्वजनिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षणिक कार्यों का निष्पादन करती हैं, समाज के लोगों का समाज के प्रति क्या योगदान है? यदि संस्थाएँ विकास कर रही हैं तो समाज भी विकास कर रहा है।

हमें समाज के विभिन्न अंगों के साथ सामंजस्य एवं समन्वय कर एक स्वर, एक लक्ष्य लेकर आगे बढ़ने का पुरजोर प्रयास करना चाहिए। हमारा मंत्र होना चाहिए–

**आपणो समाज - एक समाज - श्रेष्ठ समाज।**

- **विश्वास** – 1. मनुष्य आध्यात्मिक प्राणी है ।
  2. अपनी जिम्मेदारी स्वयं आपके हाथ में है ।

- **कविता की प्रिय पंक्तियां** –
  औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ ।
  अपने सुख को विस्तृत कर लो, सब को सुखी बनाओ ।। – *जयशंकर प्रसाद*

- **सामाजिक क्रियाकलाप** –
  1. रोटरी जिला 3291 के विशिष्ट क्लब रोटरी क्लब बेलूर का अध्यक्ष (96-97)
  2. कोलकाता के अति विशिष्ट सामाजिक क्लब हिंदुस्तान क्लब का अध्यक्ष (2017-18)
  3. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का राष्ट्रीय महामंत्री (2013-17)
  4. संपादक – समाज विकास, फ्रैंडशिप (अंग्रेजी), क्लब वार्ता आदि ।
  5. चेयरमैन – रोटरी क्लब ऑफ बेलूर बाल विकास केंद्र (खास बच्चों के लिए)
  6. न्यासी – रोटरी क्लब ऑफ बेलूर चैरिटेबल ट्रस्ट, विश्वनाथ लोहिया सेवा विकास ट्रस्ट आदि ।

- **अनुभूति** –
  1. कुछ देने से पहले मुझे ईश्वर उस लायक बना देता है ।
  2. स्वाध्याय से स्वयं अपनी प्रगति करो ।

- **अनुभव** –
  1. किसी को खुश करने के लिए अपनी निष्ठा मत बदलो ।
  2. दूसरे की नकल करके महान नहीं बना जा सकता ।

- **प्रिय उद्धरण** –
  1. परहित सरिस धरम नहि भाई, पर पीड़ा सम नहि अधमाई ।
  2. कर्म मुझे बांधता नहीं, क्योंकि मुझे कर्म के प्रतिफल की कोई इच्छा नहीं ।

- **ध्येय वाक्य** –
  1. जो भी करो अपना शत-प्रतिशत दो ।
  2. समाज को अपना सर्वश्रेष्ठ दो, समाज तुम्हें सर्वश्रेष्ठ देगा ।
  3. मनुष्य के पास असीम संभावनाएं हैं ।

# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पंजीकृत कार्यालय : 4बी, डकबैक हाउस
41, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - 700 017
फोनः (033) 4004 4089

स्थापना
25 दिसंबर 1935

प्रांतीय शाखा सम्मेलन
बिहार, झारखंड, उत्कल, पश्चिम बंगाल, असम (पूर्वोत्तर),
उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़
दिल्ली, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, तेलंगाना, केरल

## मुख्य कार्य

समाज की सुरक्षा के लिए समाज के विरुद्ध दुराग्रह फैलाने वालों के खिलाफ सशक्त एवं सामूहिक आवाज उठाना, दहेज, दिखावा, प्रदर्शन, आडंबर एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों का विरोध, महिला शिक्षा एवं नारी जागरण का समर्थन, वैवाहिक परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह का प्रसार, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास, सामाजिक समरसता, उच्च शिक्षा, छात्रवृत्तियाँ एवं छात्रावास निर्माण, प्राकृतिक आपदा एवं विपत्ति में राहत कार्यों का संचालन, विभिन्न सेवा प्रकल्पों का संचालन, राजनीतिक चेतना एवं भागीदारी व सामाजिक योगदान।